# श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

## सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. :

### ◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ दिसम्बर - 2023

ऐनरोलमेन्ट नंबर 7 शहर _____

विद्यार्थी का नाम _____

**प्रश्न-१ रिक्त स्थान**

| | |
|---|---|
| (१) | परमात्म द्रव्य |
| (२) | अष्टमंगलादि |
| (३) | औपपातिकसूत्र |
| (४) | गोविंद शाह |
| (५) | आहार |
| (६) | क्षायिक भाव |
| (७) | जीव - अजीव |
| (८) | उद्घोषणा |
| (९) | निर्मलता |
| (१०) | नागडा |
| (११) | मनवाले |
| (१२) | सात्वीक आराधक |
| (१३) | कल्याण भाजो |
| (१४) | मंदउर |
| (१५) | वैमानिक |
| (१६) | निंद्रा एवं प्रचला |
| (१७) | आत्मिक बोध |
| (१८) | पक्षापक्षी |
| (१९) | आगति |
| (२०) | युगादिदेव चरित्र |

**प्रश्न-२ एक ही शब्द में**

| | |
|---|---|
| (१) | ज्योतिषी देवोका |
| (२) | वादि देव सूरि |
| (३) | जिनवाणी से |
| (४) | बाये हाथ |
| (५) | 12वे |
| (६) | सुक्ष्मस्थावर |
| (७) | जिनकल्प |
| (८) | कृतांग सूत्र |
| (९) | श्री अद्भुदजी |
| (१०) | मस्तक |
| (११) | संसा रहित |
| (१२) | केवलसान |
| (१३) | मुंगीपट्टन |
| (१४) | कोणिक राजा |
| (१५) | दृष्टिवादो पदेशकी |

**प्रश्न-३ शब्दार्थ**

| | |
|---|---|
| (१) | जाते है |
| (२) | धारण करना |
| (३) | बोलते है |
| (४) | च्यार |

| | |
|---|---|
| (५) | भजना |
| (६) | पुरुषवेद |
| (७) | स्थावर |
| (८) | धारण करले |
| (९) | त्रेसठ |
| (१०) | पंडित |
| (११) | विघ्नोका |
| (१२) | पुण्यशालीओ |
| (१३) | विकलेन्द्रिय |
| (१४) | होता नही |
| (१५) | दीर्घ |
| (१६) | मै |
| (१७) | करते है |
| (१८) | उपदेशिका |
| (१९) | नपुंसकवेद |
| (२०) | तत्पर |

**प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ**

| | | | |
|---|---|---|---|
| (१) | 8 | (६) | 4 |
| (२) | 6 | (७) | 2 |
| (३) | 9 | (८) | 5 |
| (४) | 1 | (९) | 3 |
| (५) | 10 | (१०) | 7 |

**प्रश्न-५ संख्या में जवाब**

| | |
|---|---|
| (१) | 16 |
| (२) | 36 |
| (३) | वि.स. 1256 |
| (४) | 5 |
| (५) | 20 |
| (६) | 17 |
| (७) | 9 |
| (८) | 16 |
| (९) | 13 |
| (१०) | 3 |

| प्रश्न-६ ✓ या × | | प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर | |
|---|---|---|---|
| (१) | ✓ | (१) | 21 |
| (२) | × | (२) | 20 |
| (३) | × | (३) | 10 |
| (४) | ✓ | (४) | 5 |
| (५) | × | (५) | 24 |
| (६) | ✓ | (६) | 4 |
| (७) | ✓ | (७) | 16 |
| (८) | × | (८) | 8 |
| (९) | × | (९) | 2 |
| (१०) | ✓ | (१०) | 18 |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | + | | + | | + | | + | | + | | + | | + | | = | |
| प्रश्न-१ मिले हुए गुण | | प्रश्न-२ मिले हुए गुण | | प्रश्न-३ मिले हुए गुण | | प्रश्न-४ मिले हुए गुण | | प्रश्न-५ मिले हुए गुण | | प्रश्न-६ मिले हुए गुण | | प्रश्न-७ मिले हुए गुण | | प्रश्न-८ मिले हुए गुण | | कुल गुण | |

रीमार्क _____ जांचनेवाले की सही _____

Ans →
प्रश्न - ८

१. Ans → पुण्यशाली सचमुच जिनेश्वर की स्नात्रक्रीया पर विविध प्रकारके नृत्य करते है, रत्न व पुष्पों की वर्षा करते है, अष्टमंगलादि का आलेखन कर, मांगलिक स्तोत्र गाते है और लिपिकरोंके वंश, मित्रोके नाम व गोत्र बोलते है। विश्व का कल्याण हो, सभी परोपकार मे तत्पर बने, व्याधी, दुःख दौर्मनस्यादि नाश हो व सभी मनुष्य सुखी हो। शिवादेवी माता जिस नगर मे रहती है। उस नगर मे सभी प्रकारका उपद्रवो का नाश हो। सभी का कल्याण हो। जिनेश्वर के पूजन से सभी प्रकारके उपसर्गो का नाश होता है। विघ्नरुपी बेलेका छेदन होता है व मन प्रसन्न हो जाता है।

२. Ans → जेसींग ने महाराजा सिद्धराज कि मुलाकात की। सिद्धराज ने उन्हे बेटा कहकर संबोधीत किया, उन्हे सन्मान दिया और एक लाख टंक के मुल्य का हिराजडित हार भेट दिया और उन्हे प्रयोजन पूछा तब जेसींग ने अपनी दिक्षा लेनेका निजी भाव व्यक्त कीया तब राजा सिद्धराज ने उन्हे धराद मे विराजीत आचार्य आर्यरक्षितसुरि के पास दिक्षा लिने का सुचीत किया। तब सिद्धराज कि प्रेरणा से जेसिंग धराद गया। सुरी ने उन्हे वि.स. 1197 मे धराद मे महोत्सव पुर्वक दिक्षा दि व उनका नाम यशश्चंद्र ऐसा रखा।

३. Ans → पर्याप्ती वह विशेष शक्ती जिससे वह आहारादि पुद्‌गलो को ग्रहण करके उन्हे आहार, शरीर, इद्रीयादी रुपो मे परीणत हो। देवता 13 दंडक, गर्भजमनुष्य, गर्भज तिर्यंच और नारकी दंडक कुल मिलकर 16 दंडक को छहो पर्याप्ती होती है। विकलेंद्रिय के तिन दंडकमे पांच प्रयप्ती होती है। स्थावर को चार प्रयप्ती होती है।

४. Ans → कुल दस पयन्ना है, चउशरण पयन्ना, आतुर प्रत्याख्यान, भक्तीपरिक्षा पयन्ना, संस्तारक, महाप्रत्याख्यान, मरणसमाधि, इसमे अंतिम आराधना आदी का वर्णन प्रसंग के अनुरुप दिखाया है। तंदुल वैयालिय - इसमे गर्भ का कालमान, देह रचना, युगलिक पुरुष आदी का वर्णन दिया है। श्री गच्छाचार पयन्ना - इस सुत्र मे मुनीयोके आचार विधी की कथा है। गणिविज्जा पयन्ना - इसमे दिवस - बल वगैरह नव बलोके बारेमे ज्योतीष कि कथा है। देवेंद्र स्तवपयन्ना - इस सुत्र मे प्रभुकी स्तुती करके, अवसर पर पुछे गये प्रश्नो के उत्तर के रुप मे उर्ध्वलोक आदी कि कथाए है।

५. Ans → 12 वे क्षीणमोह गुणस्थान मे रहे हुवे क्षपक श्रेणीवाले साधु महात्मा को शुक्लध्यान का दुसरा भेद होता है। क्षपक वितराग होता है, यथाख्यात चारीत्रवाला होता है, विशुद्ध भाव युक्त होता है। क्षपक श्रेणीवाले साधु एक योग पर शुक्लध्यान के दुसरे भेदका ध्यान करते है, यह ध्यान पृथक्त्वरहीत, विचाररहीत, व वितर्क गुणयुक्त होता है। यह साधक अंतसमय मे चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, केवलदर्शन, ज्ञानावरणीय, अंतरायकर्म इन 14 प्रकृतीयोका क्षयकर मोहनीयकर्म के अंशरहित होकर केवलज्ञानसे युक्त बनता है। 101 प्रकृतीसत्ता मे 57 उदय मे होती